प्राक्कथन

प्राक्कथन

स्वंतत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्र की यह उपलब्धि रही कि नारी अनायास ही वैचारिक धरातल पर चेतन हो गयी । शिक्षित एवं आत्मनिर्भर होकर वह पुरूष के कंधे-से-कंधा मिलाकर आगे बढ़ने लगी । परिणामस्वरूप लेखन क्षेत्र में भी महिला साहित्यकारों की एक सशक्त एवं लंबी श्रृंखला निर्मित होती चली गयी । इन लेखिकाओं ने अपने अनुभवों को प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया आज-कल इस क्षेत्र में अनेक लेखिकाएँ निष्ठा, लगन, दृढ़ता और एकाग्र मन से जुटी हुई परिलक्षित होती हैं।

साठोत्तरी लेखिकाओं में मेहरुन्निसा परवेज का नाम उल्लेखनीय है। वे छत्तीसगढ़ की पहली लेखिका हैं। उन्होंने सन् १९६३ में साहित्य में अपना पदार्पण किया। उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, लेख एवं संस्मरण के द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध किया हैं। अपने इस प्रयास में आज भी वे कार्यरत हैं। ' समर-लोक ' नामक साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका के संपादिका के रूप में आज भी वे साहित्य-सेवा में निमग्न हैं। मेहरुन्निसा ने समकालीन सामाजिकता और मानसिकता को बढ़ी सूक्ष्मता से समझा और उसे अपने लेखन में यथार्थ स्वर देने का प्रयास किया है। उन्होंने स्वयं भोगे हुए यथार्थ का चित्रण अपने साहित्य में किया हैं। उन्होंने नारी की व्यथा-कथा को अनेक दृष्टियों से देखा और प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी-उत्थान को अपने साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यों में प्रमुखता दी हैं। उनके लेखन का क्षेत्र बस्तर (छत्तीसगढ़) रहा है। इसलिए उनके साहित्य में बस्तर एवं वहाँ के आदिवासियों का विस्तृत विवरण हैं। उन्होंने टूटते जीवन-मूल्य और आर्थिक विपन्नता को भी अपने लेखन का विषय बनाया है। उन्होंने निम्नवर्ग और मध्यवर्ग के पात्रों को चुनकर सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है। मेहरुन्निसा ने हिंदी गद्य-साहित्य की विविध विधाओं में अपनी प्रतिभा की चमक दिखाई है।

II

मेहरुन्निसा परवेज का ' अकेला पलाश ' नारी प्रधान उपन्यास है और नारी की अकेलेपन के साथ अन्य अनेक समस्याओं को यथार्थता के साथ उजागर करता है। औपन्यासिक तत्त्वोंके आधारपर भी यह उपन्यास सफल बन पड़ा है। मेहरुन्निसा के ' अकेला पलाश ' उपन्यास का अनुशीलन ही प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का विषय और उद्देश्य है। जब मुझे एम्.फिल. करने का मौका मिला तो विषय का चयन करने के लिए मैंने कई उपन्यास पढ़े, उसी में ही एक यह ' अकेला पलाश ' भी था। यह एक नारीप्रधान उपन्यास है जिसमें मेहरुन्निसा ने नारी के अकेलेपन की विड़म्बना को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की तहमीना ने मुझे काफी प्रभावित किया और मेरे विचार की दिशा को अधिक गतिशील बनाया । मैं स्वयं एक नारी होने के नाते इस पात्र की ओर अधिक आकर्षित हुई और मेरे मन में इस पात्र को तथा उससे संबंधित अन्य पात्रों और कथानक को गहराईसे जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। तहमीना का अकेलापन और उसकी छटपटाहट मेरे मन को कही गहराई से छु गयी थी । जब मैंने अपने मार्गदर्शक आदरणीय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से इस उपन्यास पर काम करने की इच्छा व्यक्त की तब आपने इस विषय पर काम करने के लिए न सिर्फ अनुमति दी बल्कि प्रेरित और प्रोत्साहित भी किया। प्रस्तुत उपन्यास को लेकर आरंभ में मेरे मन में जो प्रश्न उपस्थित हुए वे इस प्रकार हैं -

१ मेहरुन्निसा परवेज का व्यक्तित्व और कृतित्व कैसा है ?

२ तत्त्वों के आधारपर ' अकेला पलाश ' कहाँ तक सफल सिद्ध हुआ है ?

३ " अकेला पलाश " में नारी का चित्रण किन-किन रूपों में हुआ है ?

४ ' अकेला पलाश ' में कौन-कौन सी समस्याएँ चित्रित हैं ?

इन सभी प्रश्नों के मुझे जो उत्तर प्राप्त हुए, उन्हें प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के उपसंहार में दिया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय - " मेहरुन्निसा परवेज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

इस अध्याय में मेहरुन्निसा परवेज का व्यक्तित्व एवं उनके साहित्याभिरूचि की प्रेरक शक्तियों का उललेख है। उनके व्यक्तित्व के बहुआयामी पहलुओं के साथ-साथ कृतित्व में मेहरुन्निसा के साहित्य का परिचय दिया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए है।

द्वितीय अध्याय - " तत्त्वों के आधारपर ' अकेला पलाश ' उपन्यास की समीक्षा "

इस अध्याय के अंतर्गत उपन्यास के तत्त्वों के आधारपर उपन्यास की समीक्षा की है। इसमें कथावस्तु का परिचय देकर कथानक के गुण और विशेषताओं का विश्लेषण किया है। विवेच्य उपन्यास में प्राप्त पात्र और चरित्र-चित्रण में विभिन्न मानदण्डों के आधारपर पात्रों को विभाजित कर उनकी विशेषताएँ दी हैं। साथ ही चरित्र-चित्रण की प्रणालियों का भी विवेचन किया गया है। विवेच्य उपन्यास के संवाद और भाषा-शैली के अंतर्गत संवादों के विभिन्न प्रकारों का विवेचन करते हुए उपन्यास में उपलब्ध संवादों के प्रकारों को दिया है। प्रस्तुत उपन्यास में प्राप्त देशकाल-वातावरण की विशेषताएँ देते हुए लेखिका की सफलता-असफलता का विवेचन प्रस्तुत किया है। शीर्षक के अंतर्गत शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करने का प्रयास किया है और लेखिका के उद्देश्य को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय – " ' अकेला पलाश ' उपन्यास में चित्रित नारी "

प्रस्तुत अध्याय में नारी के विविध रूपों की खोज है। प्रारंभ में साहित्य में नारी-जीवन, हिंदी उपन्यास में नारी-जीवन तथा विद्वानों के मतानुसार नारी का विवेचन किया गया है। इसके पश्चात नारी के विविध रूपों में से माता, पत्नी, प्रेमिका, बहन, सास, नायिका रूप के साथ-साथ परिस्थितियों के जाल में फँसी नारी, त्यागमयी नारी, मानवतावादी, संन्सासिनी, समाजसेविका, कमजोर नारी, स्वार्थी, अकेलेपन से पीड़ित नारी तथा शोषित नारी का विवेचन-विश्लेषण कर अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय – " ' अकेला पलाश ' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ "

विवेच्य अध्याय के अंतर्गत समस्या और साहित्य, समस्या साहित्य की अनिवार्यता और नारी समस्याओं का चित्रण कर उपन्यास में प्राप्त समस्याओं के तीन भागों में विभाजित किया है जिनमें वैवाहिक समस्याएँ, नारियों की समस्याएँ और अन्य विभिन्न समस्याओं का विवेचन है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में उपसंहार दिया है, जिसके अंतर्गत सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात आधार-ग्रंथ और संदर्भ ग्रंथ-सूची दी गई है।

प्रस्तुत शोध-कार्य की मौलिकता –

१ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में मेहरुन्निसा परवेज के 'अकेला पलाश' उपन्यास में प्राप्त नारी की सामाजिक स्थिति, समस्या और मानसिकता को यथार्थ रूप में पहली बार सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

२ मेहरुन्निसा परवेज के व्यकित्त्व एवं कृतित्व के साथ-साथ 'अकेला पलाश ' उपन्यास का तत्त्वों के आधार पर गहराई से विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत लधु-शोध-प्रबंध में पहलीबार किया गया है।

३ मेहरुन्निसा के ' अकेला पलाश ' में चित्रित नारी के विविध रूपों का विवेचन सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है।

४ ' अकेला पलाश ' में चित्रित विभिन्न समस्याओं का गहराई से विवेचन-विश्लेषण किया है।

इस शोध-कार्य को संपन्न करने में मेरी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित करनेवाले गुरूजनों, परिवार के सदस्यों एवं आत्मीय मित्रों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ ।

मैं सर्व प्रथम अपने आदरणीय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके अमूल्य मार्गदर्शन में मैं अपना शोध-कार्य पूरा कर सकी । अपने कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी समय-समय पर आपने मुझे प्रेरित,प्रोत्साहित किया, अनेक मौलिक सुझाव दिए तथा मेरी अनेक समस्याओं को हल किया । आपके कारण मेरी अनेक बाधाएँ हल हुई । आपका यह स्नेहिल और आत्मीयता पूर्ण स्वभाव मुझे जीवनभर याद रहेगा, जिसके लिए में आजीवन कृतज्ञ रहूँगी और भविष्य में भी आपके आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन की कामना करूँगी ।

मेरी माता जी श्रीमती रत्नप्रभा मधाले, पिताजी श्री. भास्कर मधाले, भाई राहुल, मामाजी श्री प्रभाकर भुजंगे, चाचाजी श्री. अरूण, श्री. मिलिंद तथा प्रा.श्री. शाहु मधाले जी इन सब के आशीर्वाद और सदिच्छा के कारण ही मैं अपना शोध-कार्य बिना अवरोध पूरा कर सकी। साथ ही श्रीमती अपराध मॅडम,

डॉ. शशिप्रभा जैन तथा डॉ. सौ. जे. एम. देसाई आदि ने भी मुझे समय-समय पर मदद तथा मार्गदर्शन किया । अत: इन सबकी मैं हृदय से अभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मदद की ।

प्रस्तुत शोध-कार्य का टंकन सुचारू रूप से करनेवाले श्री बालकृष्ण सावंत और उनके बेटे कु. चंद्रमोहन सावंत जी की मैं विशेष रूपसे आभारी हूँ। अंत में उन ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहकार्य मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ है, उन सबका हृदय से आभार प्रकट करती हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि :३०:१२: २००२।

शोध-छात्रा

Madhale

(कु. वृषाली भास्कर मधाले)